International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 08 | Aug - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

‘ वारिस ’ कहानी में समर्पण, ज्ञान और विरासत की समृद्ध परंपरा ।

प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे

सहयोगी अध्यापक तथा विभागाध्यक्ष ,

एस.एम. बी. पी.के. महाविद्यालय,शंकरनगर

तह- बिलोली, जि.- नांदेड

Email-bhumare1984@Gmail.com

शोधसार -

वारिस यह कहानी शिक्षक और छात्रों के बीच के संबंधों का मार्मिक उद्घाटन करती है साथ ही आज के शिक्षा में अध्यापकों का समर्पण और दायित्वबोध का परिचय भी कराती है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक और छात्र का संबंध ज्ञान और चरित्र निर्माण का आधार है, जिसमें विश्वास, सम्मान और खुला संवाद महत्वपूर्ण है। यह संबंध छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय बनाता है, उनका आत्मविश्वास बढ़ाता है और स्कूल के प्रति जुड़ाव की भावना पैदा करता है, जिससे उनका शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास होता है। एक सकारात्मक संबंध,एक सुरक्षित और स्वागतयोग्य कक्षा वातावरण बनाता है जहाँ छात्र अपनी चिंताओं और विचारों को खुलकर साझा कर सकते हैं। इसी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति वारिस कहानी में छात्र और मास्टर जी के आपसी रिश्ते में हुई है। साथ ही मास्टर जी के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए ज्ञान और विरासत की परंपरा का प्रतीक के रूप में पेन उपहार देना शिक्षक और छात्रों के बीच के मधुर संबंध को दर्शाता हैं ।

बीज शब्द - शिक्षा व्यवस्था,आर्थिक परिवेश, समर्पण,त्याग,मानसिक और शारीरिक घुटन,बच्चों में स्नेह,भौतिक विलासिता से दूर, ,शिक्षक और छात्र का संबंध

प्रस्तावना -

हिंदी साहित्य में 1950 और 1960 के मध्य में एक आंदोलन खड़े रहा है जो पुरानी परंपराओं और मान्यताओं से हटकर साहित्य की सर्जना करता रहा है क्योंकि स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज,परिवार और राष्ट्र के स्तर पर कई बदलाव हुए । इन बदलावों के परिणाम से वास्तविक जीवन , सामाजिक यथार्थ ,व्यक्ति की अन्तरात्मा और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं के केंद्र में रखकर हिंदी का कथा साहित्य समृद्ध होते रहा है। बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश ने मध्य वर्गों को प्रभावित किया है । उनका संघर्ष, परंपरा और आधुनिकता की दोहरे परिवेश से प्रभावित रहा है। अकेलापन,अस्तित्व की तलाश, मूल्यों का टूटन, आर्थिक महंगाई की मार के जैसी समस्याओं ने मानवीय जीवन को

प्रभावित किया । साथ ही महानगरों के बढ़ते प्रभाव के कारण से आदमी का पारिवारिक और सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ है परिणाम स्वरुप महानगरीय परिवेश में अकेलापन,आर्थिक विपन्नता और अभावग्रस्त जीवन उजागर होने लगा है । जिसके परिणाम नई कहानी आंदोलन के माध्यम से अभिव्यक्त हुए है। ऐसी समस्याओं को केंद्र में रखकर कहानीकारों ने अपने विषय चुने जिस कारण नई कहानीकारों को विशेष प्रसिद्धि मिली है। जिसमें मोहन राकेश एक प्रमुख कहानीकार के रूप में उभरते रहे है। उन्होंने कहानियों में सामाजिक,आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं को यथार्थ भाव से जोड़ने का कार्य किया है । उनकी वारिस यह कहानी समकालीन समाज के साथ - साथ वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है।

वारिस कहानी का प्रतिपाद्य विषय

वारिस यह कहानी संग्रह 1973 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह की वारिस यह प्रमुख और महत्वपूर्ण कहानी रही है। यह कहानी वर्तमान युगीन शिक्षा व्यवस्था के बदलाव तथा शिक्षक और छात्र के मधुर संबंधों को दर्शाती है । मास्टरजी और उनके दो शिष्य ही ईस कहानी के पात्र हैं। अध्यापकों की पढ़ाने की एक कला होती है जिसके माध्यम से अध्यापक और छात्र का एक ऐसा आत्मिक और भावनात्मक रिश्ता बन जाता है जिस कारण दोनों के लिए भी यह गुरु-शिष्य का मधुर संबंध संस्मरणात्मक बन जाता है। मास्टर जी अपना पेशा समर्पण और ईमानदारी से निभाते हैं कि, मास्टर और छात्र दोनों के लिए भी रिश्ता तोड़ना कठिन हो जाता है । समय किसी के लिए रुकता नहीं है जब मास्टर जी के अंत का समय आता है तो मास्टर जी अंत में शिक्षा जगत से संन्यास लेने का निर्णय लेते हैं और अपने वारिस के रूप में अपने छात्रों को ज्ञान ,विचार और दर्शन का प्रतीक के रूप में पेन देते हैं जिससे यह संकेत मिलता है कि, मास्टर जी अपनी जिम्मेदारी अपने छात्रों पर सौंप कर उससे मुक्त हो जाते हैं। अतः यह कहानी मास्टर जी के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत करती है साथ ही समर्पण भाव, कर्तव्य परायणता और विनम्र भाव भी दृष्टिगत होते हैं ।वारिस यह कहानी शिक्षा जगत की यथार्थ परिस्थितियों का निम्न रूप से बोध कराती है।

मास्टर जी का आर्थिक परिवेश गरीब एवं निम्न स्तर का रहा है ।वह जीवन भर अभाव और तंगी से जीविकोपार्जन चलाते रहे हैं । उनके पास भौतिक साधनों का अभाव है साथ ही अपनी जरूरी चीजों की पूर्तता कठिनाई से कर रहे थे। वे स्वंय कहते हैं कि, " एक भी पैसा ना होने से वे बहुत तंगी में है मगर वे किसी से खैरात नहीं लेना चाहते"।1 पुराने जमानों से अध्यापकों की परंपरा रही है कि, अध्यापक अपना जीवन कम से कम साधनों में उपजीविका चलाते रहे हैं। परिस्थितियों के अनुरूप जीवन चलाने की कला उन्हें अवगत रही है। वे भौतिक साधनों के पीछे न भागते हुए देहातों, कस्बों तथा गांव में जो भी मिलता था उसी से काम चलाते थे। परंतु जीवन में पूंजी की भी आवश्यकता होती है। जीवन भर उन्होंने जो अध्यापन कार्य किया था उससे कुछ ही पूंजी जमा कर पाते थे, संग्रह की प्रवृत्ति उनमें नहीं थी। जिसमें भी अधिकतर जरूरी चीजों का ही समावेश होता था। जैसे, " यह मेरी सारी जिंदगी की पूंजी है।"2 मास्टर जी अपने जीवन कार्य में सेवा को महत्व देते रहे हैं जिस कारण लोगों में उनका सम्मान होता रहा है । कहानी के मास्टर जी पहले से ही गरीब घर के थे साथ ही आर्थिक तंगी का जीवन जी रहे थे ।ऐसे में उपजीविका चलाने हेतु ट्यूशन लेकर कुछ पैसों का इंतजाम करके ज़रूरतें पूरी करना चाहते हैं ।जब वह दोनों बच्चों के ट्यूशन लेकर पढ़ाने लगे तो उनसे जो धन मिलता था उसी में से उपजीविका चलाते थे । एक समय में शिक्षक और छात्रों में सेवा की भावना थी इसीलिए छात्र भी गुरुओं का

सम्मान करते थे और उनकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। मास्टर जी जब बीमार हो जाते हैं तब वे दोनों बच्चे मास्टर जी के घर पर जाते हैं और कमरे की बेहाल स्थिति देखते हैं। तब वे दोनों बच्चे उनके पास जाकर उनके घुटन भरे कमरे में केवल कुछ पुस्तके और उनकी पूंजी के रूप में उन्हें देखने को मिलती है ।

मास्टर जी अकेलेपन से पीड़ित भी थे।अपने गांव ,लोगों को छोड़कर शिक्षा और अध्यापन के कामकाज हेतु पहाड़ी गांव में आते हैं । गांव में रहकर बच्चों को अध्यापन का कार्य करते हैं । अपना कामकाज पूरा होने के बाद वे कहीं दूर चले जाते हैं। वे कहते हैं कि, " उन्होंने निश्चय किया था कि,वे कुछ दिन जाकर गरुड़ चट्टी में रहेंगे,फिर उससे आगे घने पहाड़ों में चले जाएंगे ,जहां से फिर कभी लौटकर नहीं आएंगे ।''3 मास्टर जी के कृतित्व में शिक्षा के प्रति समर्पण और त्याग की भावना रही है। वे स्वयं का कार्य स्वंय ही संपन्न करते रहे हैं। खाना बनाने से लेकर, घर और परिसर स्वच्छ रखने का कामकाज करने में उन्हें कोई एतराज नहीं था । जिस प्रकार अवतारी महापुरुषों का कार्य समाप्त होता है उसी प्रकार मास्टर जी भी अपना कामकाज पूरा हो जाने के बाद संन्यास लेकर दूर पहाड़ों में चले जाने की योजना बनाते हैं। ज्ञानी और विनम्र स्वभाव के लोगों की पहचान उनके कार्यों से होती है। वे अपने कर्म एवं आचरण से एक वृत्त का पालन करते हैं ।जिससे उनकी एक छवि बन जाती है। वे नियम के पक्के थे जब उनके पास अतिरिक्त ट्यूशन का प्रस्ताव आता है, धन कमाने का मोह उन्हें तनिक भी नहीं होता है। वे धन कमाने के लालच से कोसों दूर होते हैं। नए ट्यूशन का प्रस्ताव आने पर भी वे उसे ठुकराते हैं । वे अधिक कमाने की लालसा नहीं रखते। बल्कि अपनी आवश्यकता के अनुसार ही जीवनयापन करते हैं ।जीवन में कई प्रकार की मानसिक और शारीरिक घुटन से उन्हें गुजरना पड़ा है फिर भी वे जीवन में डगमगाते नहीं है ।संकटों का डटकर सामना करते हैं और अपने शिष्यों को भी डटे रहने का संदेश देते हैं ।जैसे, '' कोठरी निहायत बोसीदा थी और उसमें चारों तरफ से पुरानी सीलन की गंध आती थी ।''4 मास्टर जी को रहने के लिए जो कमरा मिला था उसी में वे अपना जीवन बिताते थे। वास्तविक रूप में वह कमरा केवल नाम के लिए ही था। उसमें चारों ओर गंदगी, घुटन तनाव भरी जिंदगी में उन्होंने दिन बिताए थे। उनकी कोठरी में कुछ ही फटे पुराने कपड़े, डंडे और कमंडल और पुरानी पुस्तकों के अलावा उसमें ऐसा कुछ भी विशेष नहीं था। साथ ही वह हमेशा अपने पास भगवतगीता रखते थे। उन्होंने आर्थिक तनाव को झेलकर दिन बिताए थे। सामूहिक भिक्षा के बजाय वे ट्यूशन लेकर काम करने वाले स्वाभिमानी, प्रयत्नवादी शिक्षकों में से थे । उनके मानसिक घुटन का चित्रण निम्न रूप से हुआ है। जैसे,"खिड़की में सलाखों की जगह बांस के टुकड़े लगे थे ,गली से उठती हुई भयानक दुर्गंध से दिमाग फटने लगता ।"5 ऐसे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मास्टर जी अपने काम के प्रति समर्पण को कदापि नही भूले है । ऐसी घुटन भरी गलियों में मास्टर जी ने दिन बिताए थे। वे अपने दुर्भाग्य का रोना नहीं रोते। गरीबी के कारण वे लाचार थे फिर भी वे काम की तलाश में रहते थे और उनका खुद के मेहनत पर विश्वास था। इसलिए वे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का काम करते थे। उनके चरित्र में स्वाभिमान एवं समर्पण का जो जज्बा था वह आज भी अध्यापकों तथा छात्रों को काम करने की प्रेरणा देता है। वे अंत तक अपने नियमो का पालन करते रहे हैं। स्वंय के जीवन में पीड़ा - घुटन सहकर भी वे छात्रों के जीवन का अंधकार दूर करना चाहते थे। स्वंय की आर्थिक, पारिवारिक पीड़ा झेलकर भी उनकी किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं रही है। स्वयं के दुर्भाग्य से या समाज से अपना रोना नही रोते हैं । बुरे दिनों से लड़कर ही अच्छे दिन आने के प्रारब्ध पर उनका विश्वास रहा है। मास्टर जी काम न मिलने पर हताश होते रहे परंतु काम की तलाश उनकी जारी रहती रही है । दो बच्चों के

ट्यूशन बंद हो जाने पर वह अपना कामकाज स्वंय ही समाप्त करते हैं । अर्थात मास्टर जी प्रचंड आशावादी थे । जब अपने काम से किसी का भला नहीं होता या कोई अनदेखा करता है तो ऐसे प्रसंगानुसार मास्टर जी ने स्वयं ही वहां से विदा होने का निर्णय लिया है। जैसे दो बच्चों की शिक्षा समाप्त हो जाती है तो उनके पिताजी के द्वारा मास्टर जी को आर्थिक अभाव का जिक्र करने पर मास्टर जी तुरंत समझ लेते हैं और अपना ट्यूशन बंद करके जंगलों की और जाने का निर्णय लेते हैं ।

आम आदमी की आर्थिक स्थिति आज भी अधिक सधन नहीं है। आम आदमी को हर दिन का संघर्ष करना पड़ता है। तब जाकर उन्हें दो समय की रोटी मिलती है । वारिस कहानी के मास्टर जी की यही स्थिति रही है ,वे भी आर्थिक अभाव का शिकार बनते रहे हैं ।उनके पास केवल निम्न रूप से साधन थे ।जैसे,“ कपड़ों के नाम पर वही चंद चिथड़े थे जो हम उनके शरीर पर देखा करते थे।”6 मास्टर जी एक ही पोशाक को बदल-बदल कर पहनते थे। छात्र जब उनके कमरे पर आते हैं तो उनके कमरे का जो दृश्य छात्रों ने देखा वह बड़ा ही करुणाजनक विवश परिस्थिति को दर्शाने वाला रहा है। उनका शरीर भी इतना साधारण सुदृढ - तंदुरुस्त नहीं था । जो उनके कपड़ों में से शरीर की हड्डियां छूप नहीं जाती थी। वह दुबले- पतले कद के थे। जैसे,“मास्टर जी अपने रोज के कपड़ों के ऊपर एक मोटा गेरुआ कंबल लिए बैठक में पहुंच गए। 7” जब भी उनको किसी से मिलना होता था तो मास्टर जी एक शर्ट के ऊपर कंबल ओढ़ कर लेते थे क्योंकि भौतिक विलासिता से वे कोसों दूर थे। विलासितापूर्ण जीवन उन्हें पसंद नहीं था। अपने छात्रों को पेन का उपहार देना एक संवेदनात्मक मास्टर आर्थिक रूप से सीमित जिंदगी का संदेश देते है। व्यक्ति का सामाजिक अभावग्रस्त जीवन उनके परिवेश से जुड़ा रहा है । जीवन के लिए उन्होंने किसी भी प्रकार की पूंजी जमा नहीं की है बल्कि समाज के लिए ही अपना सब कुछ देते रहे हैं । एक साधारण जीवन जीने वाले, मास्टर जी शारीरिक परिश्रमों से गुजरते हैं । उनका रहन-सहन भी अधिक विलासी नहीं था बल्कि परिवेश के अनुकूल में रहन-सहन अपनाते रहे है। जैसे “ वह हमारे घर से थोड़ी दूर एक गंदी सी गली में चार रुपए महीने की कोठरी लेकर रहने लगे थे।”8 अध्यापक को अपने जीवन में क्या आवश्यक होता है उसके तरफ ही ध्यान देता है । अध्यापक को ज्यादा पैसों की जरूरत नहीं होती फिर भी जीवनयापन के लिए जितने धन की आवश्यकता होती है उतना धन भी होना जरूरी होता है।

तात्पर्य यह है कि, वारिस इस कहानी के माध्यम से मोहन राकेश जी ने शिक्षा और शिक्षा जगत के छात्रों और उनके संबंधों को उजागर किया है। शिक्षा की व्यवस्था में शिक्षकों का उत्तरदायित्व बड़ा होता है और इसे शिक्षकों ने ठीक ढंग से निभाया तो प्रतिभाशाली छात्रों के भविष्य का निर्माण होता है। साथ ही नीत नए आविष्कार भी होते रहते हैं। नई पीढ़ी का सृजन विशेष रूप से शिक्षकों के हाथों में होता है क्योंकि परिवार, समाज और देश की भावी पीढियों के माध्यम से अपने भविष्य का निर्माण करने में जुड़ी होती है। उनके इस सुनहरे भविष्य के निर्माण में अध्यापकों का महत्वपूर्ण स्थान होता है । आज जरूरत है मास्टर जी जैसे अध्यापकों की जो अपने छात्रों में विश्वास, समर्पण और स्वाभिमान जैसी प्रवृत्तियों का निर्माण करता है। जिससे समाज और देश का नवनिर्माण होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। इस प्रकार इस कहानी के माध्यम से अध्यापक और छात्र के मानवीय रिश्तों को उजागर किया है। साथ ही शिक्षकों के जीवन में नीत नई समस्याओं के कारण समस्त शिक्षा क्षेत्र भी किस प्रकार प्रभावित होता है । उसका भी ज्वलंत चित्र कहानी के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। अतः मास्टर जी और छात्र के आत्मिय रिश्ते में जो मिठास है वही शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए

प्रोत्साहन देती है । छात्रों के मन में पढ़ने के लिए रुचि निर्माण करने साथ ही छात्रों के जीवन को आकार देने में मास्टर जी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। अर्थात समाज और देश की भावी पीढ़ी के नवनिर्माण में समस्त शिक्षकों के योगदान को इस कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

सारांश -

मोहन राकेश की 'वारिस' कहानी की मूल संवेदना मानवीय स्नेह और विरासत में जीवन का सार छोड़ने की इच्छा है। यह एक ऐसे मास्टरजी की कहानी है जो बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते उनसे मोह में बंध जाते है और अपना जीवन ज्ञान और अनुभव बच्चों को सौंपकर उनसे विदा लेते है। कहानी में बच्चों के प्रति उनके लगाव और जीवन की क्षणभंगुरता को दर्शाया गया है, जहाँ वह अपनी सारी पूंजी और ज्ञान को ही अपनी विरासत के रूप में बच्चों को देना चाहते हैं ।

संदर्भ सूची -

1. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 217

2. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 217

3. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 218

4. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 219

5. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 220

6. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 221

7. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 221

8. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियां राजकमल प्रकाशन,प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 ,पृष्ठ क्रमांक - 222